2 हेर-फेर

पाठ के उद्देश्य

विषय-वस्तु

काम करने पर ज़ोर देना और कर्म का महत्व समझना।

भाषा-कौशल

पाठ को उचित हाव-भाव के साथ पढ़ाना तथा नए शब्दों से परिचित कराना।

भाषा तथा व्याकरण

अतिरिक्त व्यंजन (ड़-ढ़), नुक्ता (ज़-फ़)और तत्सम-तद्भव शब्दों को जानना।

आइए जुड़ें

- क्या आपने कभी ऐसे लोगों के बारे में सोचा है, जो हमारे घर बनाते हैं, तपती धूप में रिक्शा चलाते हैं या बहुत अधिक शारीरिक श्रम करते हैं? ऐसे ही कुछ लोगों के बारे में सोचिए और उनके जीवन की कठिनाइयों के बारे में अपने विचार लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

एक गरीब मज़दूर सारा दिन खून-पसीना एक कर देने वाली मेहनत करने के बाद, साँझ के समय दो आने अपनी फटी-पुरानी चादर के कोने में बाँधकर शहर से निकला और मज़दूरों की बस्ती की तरफ़ चला। बहुत दूर उसने अपने कच्चे झोंपड़े के धुएँ को आकाश में चक्कर काटते देखा और देखते ही समझ गया कि उसकी माँ उसके लिए खाना पका रही है।

वह नंगे सिर, नंगे पाँव जा रहा था। उसके घर में सिवाय उसकी बूढ़ी माँ के और कोई सगा-संबंधी न था। उसके घर में एक चूल्हे और दो-चार बरतनों के अलावा और कोई साज-सामान भी न था, मगर फिर भी वह खुश था। उसकी चादर में दो आने बँधे थे, उसके दिल में आशा भरी थी। सामने से एक बारात आ रही थी। मज़दूर ने उसे देखा और उसे खयाल आया, "हो सकता है, कभी मेरा भी ब्याह हो और मैं भी बारात लेकर ब्याहने निकलूँ। उस समय मैं कितना खुश होऊँगा, मेरे साथ-साथ बाजे बज रहे होंगे और..." तभी बारात के आगे चल रहे नौकरों ने उससे कहा, "एक तरफ़ हट जा छोकरे!"

मज़दूर के ब्याह की कल्पना मिट्टी में मिल गई। वह खीझकर बोला, "क्यों हट जाऊँ? सड़क सिर्फ़ तुम्हारी नहीं है। इस पर हम भी चल सकते हैं!"

बारातवालों ने उसे पीटा, उसकी चादर फाड़ दी और उसे उठाकर सड़क के किनारे झाड़ियों में फेंक दिया।

बारात चली गई। बारात के बाजों का शोर धीरे-धीरे दूर जाकर शहर के प्रकाश में गायब हो गया। अब वहाँ अकेला मज़दूर था। उसके चारों तरफ़ रात का सन्नाटा था, निराशा का अँधेरा था और दुखी दिल की आहें थीं। वह घुटनों के बल धरती पर बैठ गया और अपनी सजल आँखों से आकाश की ओर देखकर बोला, "हे प्रभो! हमारे पास न धन-दौलत है, न महल-अटारियाँ, न नौकर-चाकर। फिर तूने हमें क्यों पैदा किया? क्या सिर्फ़ इसलिए कि अमीरों के नौकर आएँ और हमें मार-पीटकर उठाकर सड़क के किनारे फेंक दें! आखिर दुनिया को हमारी क्या ज़रूरत है?"

शब्दार्थ

साँझ – शाम, ब्याह – शादी,
खीझ – क्रोध, प्रकाश – रोशनी,
सजल – जल से भरी हुई

कई वर्ष बीत गए। मज़दूर ने जी-जान से काम किया। दिन का आराम बेचा, रात की नींद बेची और कई तरह के काम करके धनी बन गया। अब वह मज़दूर न था, अपने नगर का नामी रईस था। उसके संदूकों में रुपये और मुहरें थीं। उसके पास रहने के लिए विशाल महल था। उसकी सेवा करने को दास-दासियाँ थीं। उसकी सवारी के लिए घोड़े और पालकियाँ थीं और लोग उसके सामने सिर झुकाकर आते थे।

एक दिन साँझ के समय वह पालकी पर सवार अपने घर लौट रहा था कि एकाएक उसकी पालकी रुक गई। उसने नौकरों से पूछा, "क्या है?"

"सरकार! मज़दूरों की बारात आ रही है।"

"उन्हें कहो, एक ओर हट जाएँ।"

"वे कहते हैं, सड़क सिर्फ़ तुम्हारे लिए नहीं है। इस पर हम भी चल सकते हैं।"

"पाजियों को डंडे मारकर भगा दो। ये हमारा रास्ता क्यों रोकते हैं?"

डंडे बरसने लगे। मज़दूर चीखें मारते हुए इधर-उधर भागने लगे। थोड़ी देर बाद वहाँ एक भी मज़दूर न था, मगर उनकी चीखों से पालकी पर सवार अमीर का दिमाग खराब हो गया। उसने अपने नौकरों से कहा, "मुझे पालकी से उतार दो। मैं आराम करूँगा।"

नौकरों ने सड़क के किनारे गलीचे बिछा दिए और अपने मालिक को आराम से बिठा दिया। उसे ऐसा मालूम हुआ, जैसे वह यहाँ कभी पहले भी बैठ चुका है। शायद कई वर्ष पहले। शायद किसी पिछले जन्म में। इस समय उसका शरीर अपनी पोशाक में गरम था। उसके सामने उसके नौकर हाथ बाँधे खड़े थे और शहर में उसके राजसी महल का द्वार उसके लिए खुला था। वह नरम गलीचे पर पालथी मारकर बैठ गया और अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर बोला, "हे प्रभो! इन अभागे मज़दूरों के पास न धन-दौलत है, न महल-अटारियाँ, न नौकर-चाकर। फिर तूने इन्हें क्यों पैदा किया है? क्या सिर्फ़ इसलिए कि ये अमीर लोगों के रास्ते में आ खड़े हों और हमारा समय नष्ट करें। आखिर दुनिया को इनकी क्या ज़रूरत है?"

–सुदर्शन

शब्दार्थ

पाजी – पागल, गलीचा – कालीन, पोशाक – पहनने का कपड़ा

रचनाकार परिचय

सुदर्शन का असली नाम बदरीनाथ था। इनका जन्म सियालकोट में 1895 में हुआ था। प्रेमचंद के समान वे भी पहले उर्दू में लिखते थे। इनकी भाषा सरल, स्वाभाविक, प्रभावोत्पादक और मुहावरेदार है। ये प्रेमचंद परंपरा के कहानीकार हैं। इनका दृष्टिकोण सुधारवादी है। 'हार की जीत' इनकी पहली कहानी थी, जो 1920 में सरस्वती में प्रकाशित हुई थी। इनकी महारत गद्य और पद्य दोनों में ही थी। इनकी रचनाओं में तीर्थ-यात्रा, पत्थरों का सौदागर, पृथ्वी-वल्लभ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। सन् 1967 में इनका निधन हो गया।

कीजिए और सीखिए

उच्चारण तथा श्रुतलेख

खयाल, सन्नाटा, अटारियाँ, गलीचा, पोशाक, संदूक, मुहरें

बोलिए

- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–** (Knowledge)

(क) आकाश में चक्कर काटता धुआँ क्या दर्शा रहा था?

(ख) क्या बारातियों द्वारा किया गया व्यवहार उचित था? क्यों अथवा क्यों नहीं?

(ग) मज़दूर नामी रईस किस प्रकार बना?

(घ) कहानी का नाम 'हेर-फेर' क्यों रखा गया होगा?

लिखिए

1. सही उत्तर चुनकर सही (✓) का निशान लगाइए– (Application)

(क) यदि दिल में आशा हो तो क्या होता है?

हमारा मनोबल गिर जाता है। ☐

हम लक्ष्य से भटक जाते हैं। ☐

हम हर स्थिति में खुश रह सकते हैं। ☐

(ख) कहानी का केंद्रीय बिंदु था–

परिस्थिति के साथ विचार में बदलाव ☐

माँ और बच्चे का प्रेम ☐

समाज में समानता का विकास ☐

(ग) मज़दूर घर जाते हुए किस बात की कल्पना कर रहा था?

अपने ब्याह की ☐ बड़ा आदमी बनने की ☐ भूख की ☐

2. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) उसके चारों तरफ़ रात का ..... था ।

(ख) अपनी ..... आँखों से आकाश की ओर देखकर वह बोला।

(ग) उसकी ..... में रुपये थे और मुहरें।

(घ) ..... को डंडे मारकर भगा दो।

(ङ) वह नरम ..... पर पालथी मारकर बैठ गया।

3. लघु उत्तरीय प्रश्न (Understanding)

(क) मज़दूर की एक विशेषता लिखिए।

.....

(ख) कहानी के अंत में अमीर व्यक्ति ने प्रभु से क्या कहा?

.....

.....

(ग) पालकी पर सवार आदमी का दिमाग किस बात पर खराब हो गया? क्या इसके पीछे उसका कोई पूर्व अनुभव रहा था?

.....

.....

(घ) मज़दूर व्यक्ति ने क्यों कहा कि 'आखिर दुनिया को हमारी ज़रूरत ही क्या है?'

.....

.....

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Critical Thinking)

(क) सामने जाती बारात को देखकर मज़दूर ने क्या सपना देखा और उसकी कल्पना मिट्टी में क्यों मिल गई?

.....

.....

.....

(ख) कहानी में दो बार एक ही प्रश्न उठाया गया है कि 'आखिर दुनिया को मज़दूरों की क्या ज़रूरत है?' आप इस विषय में क्या सोचते हैं? अपने विचार लिखिए।

.....

.....

.....

योग्यता विस्तार (Critical Thinking)

1. मेहनत करने वाले लोगों की ज़रूरत हमें क्यों है?
2. मज़दूर आदमी मेहनत करके एक दिन अमीर आदमी बन गया। अमीर बनने के बाद वह एक दिन शाम को घर जा रहा था, रास्ते से मज़दूरों की बारात जा रही थी। उसने मज़दूरों को रास्ते से हटाने के लिए उन्हें डंडे से मारने का आदेश दिया।
   - कहानी की इस घटना के आधार पर बताइए कि क्या गरीब से अमीर बना जा सकता है?
   - कहानी की इस घटना के आधार पर अमीर बने मज़दूर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

भाषा तथा व्याकरण

1. 'ड़' और 'ढ़' व्यंजन हिंदी वर्णमाला में 'अतिरिक्त व्यंजन' के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। 'ड़' और 'ढ़' व्यंजन से कोई शब्द प्रारंभ नहीं होता। ये व्यंजन हमेशा किसी भी शब्द के बीच में 'तीन वर्णों वाले शब्दों में' या अंत में 'दो वर्णों वाले शब्दों में' प्रयोग किए जाते हैं; जैसे–

   ड़ – लड़का, खड़ा

   ढ़ – पढ़ाई, गाढ़ा

नीचे दी गई तालिका में ड-ड़ एवं ढ-ढ़ वाले तीन-तीन शब्द लिखिए–

ड	ड़	ढ	ढ़
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

2. किसी व्यंजन अक्षर के नीचे लगाए जाने वाले बिंदु को नुक्ता कहते हैं। उर्दू, अरबी, फ़ारसी या अंग्रेज़ी भाषा से हिंदी भाषा में आए शब्दों में 'ज़', 'फ़' आदि वर्णों को अलग से बताने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है। नीचे दिए शब्दों को बोलिए और देखिए कि जब अक्षर के नीचे नुक्ता लगता है, तो उसकी आवाज़ में क्या अंतर आ जाता है।

ज	जल	जान	सजा	फ	फल	फूल	सफल
ज़	चीज़	ज़ोर	सज़ा	फ़	सिर्फ़	फ़िल्म	फ़व्वारा

नीचे दी गई तालिका में ज-ज़ एवं फ-फ़ वाले तीन-तीन शब्द लिखिए–

ज वाले शब्द	ज़ वाले शब्द	फ वाले शब्द	फ़ वाले शब्द
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

3. जो शब्द संस्कृत से हिंदी में बिना परिवर्तन किए अपना लिए जाते हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं, जैसे– भानु, प्राण आदि।

जो शब्द संस्कृत से उत्पन्न या विकसित हुए हैं या संस्कृत से विकृत होकर हिंदी में प्रयुक्त किए जाते हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं, जैसे– काम, माँ आदि।

विदेशी भाषाओं से हिंदी में आए शब्दों को विदेशी शब्द कहा जाता है। इन विदेशी भाषाओं में मुख्यतः अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंग्रेज़ी व पुर्तगाली शामिल है, जैसे– अल्ला, आदमी, इनाम, औरत आदि।

नीचे दी गई तालिका में पाठ में आए तत्सम, तद्भव और विदेशी शब्दों को छाँटकर लिखिए–

तत्सम	तद्भव	विदेशी शब्द
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

कीजिए और जानिए
(विषय संवर्धक गतिविधियाँ)

सोच-समझकर

1. कल्पना कीजिए कि मज़दूर वर्ग यदि काम करना छोड़ दे, तो हमारा जीवन कैसा होगा और हमारे जीवन में क्या-क्या समस्याएँ आ सकती हैं?

यदि मज़दूर काम करना छोड़ दे, तो .....

.....

.....

.....

.....

2. अगर कोई मेहनत करने वाला मज़दूर वर्ग का व्यक्ति आपसे कोई सहायता माँगता है, तो आपको क्या करना चाहिए और क्यों?

खोज-परखकर

- श्रम हमारे जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण हिस्सा है। अपने आस-पास देखिए और बताइए कि आपके आस-पास कौन, कैसा श्रम कर रहा है?

कौन (श्रम करने वाला)	कैसा (कौन-सा काम या श्रम)
.....	.....
.....	.....
.....	.....

श्रमिक का महत्व

- 'श्रमिक का महत्व' विषय पर एक चित्रात्मक परियोजना बनाइए और कक्षा में दिखाइए। नीचे दिए गए संकेत-बिंदुओं से जुड़ी जानकारी देते हुए परियोजना कार्य पूरा कीजिए।
  - विभिन्न प्रकार के श्रम
  - उनसे संबंधित चित्र
  - श्रमिकों के प्रति संवेदनशील बनाने वाले स्लोगन

3 हमारे अपने खेल

पाठ के उद्देश्य

विषय-वस्तु

पुराने समय के खेलों के बारे में जानना।

भाषा-कौशल

पाठ को उचित हाव-भाव के साथ पढ़ाना तथा नए शब्दों से परिचित कराना।

भाषा तथा व्याकरण

संयुक्ताक्षर एवं द्वित्व व्यंजन, 'र' के रूप और सर्वनाम शब्दों को जानना।

आइए जुड़ें

- अपने परिवार अथवा मित्र के साथ खेले गए किसी एक खेल का अनुभव लिखिए।

451, कवि नगर, दिल्ली

05 अक्तूबर, 20.....

प्रिय भास्कर,

हमें अपने गाँव से आए हुए दो दिन हुए हैं। कुछ दिन पहले ही पिता जी ने कहा कि इस बार हम अपने गाँव चलेंगे। बस फिर क्या था! हमने गाँव जाने का कार्यक्रम बना लिया और निर्धारित दिन गाँव के लिए निकल गए। इस पत्र के द्वारा मैं तुम्हें गाँव में बिताए दिनों के बारे में जानकारी दूँगा।

जैसा कि तुम जानते हो कि हमारा गाँव एक पहाड़ी गाँव है। इस कारण वहाँ मौसम बड़ा ही मनभावन होता है। वहाँ लोग एक-दूसरे की मदद करते हैं और आपस में मिल-जुलकर रहते हैं। वहीं सभी बच्चे भी एक-दूसरे के साथ काफ़ी प्रेम से रहते हैं और खेलते-कूदते हैं। वैसे तो हमारा गाँव अब काफ़ी उन्नति कर चुका है और वहाँ भी शहरों की तरह काफ़ी सुख-सुविधाएँ हैं, लेकिन इसके बावजूद वहाँ लोग अपने रीति-रिवाज़ों तथा परंपराओं को अच्छे से निभाते हैं।

भास्कर, मैंने वहाँ अपने शहर में खेले जाने वाले खेलों के अलावा कई खेल खेले, जैसे- गिल्ली-डंडा। वहाँ इसे कई बच्चे खेलते हैं। बस इसे खेलने के लिए थोड़ी-सी सावधानी बरतने की ज़रूरत होती है, क्योंकि थोड़ी-सी चूक से चोट लग सकती है। इसको खेलने के लिए कम-से-कम दो खिलाड़ियों की आवश्यकता होती है। एक खिलाड़ी डंडे की मदद से गिल्ली को मारकर उसे अधिक-से-अधिक दूर तक पहुँचाने की कोशिश करता है। वहीं दूसरे खिलाड़ी को गिल्ली को उठाकर वहीं से डंडे पर मारना होता है। डंडे पर लगने पर पहला खिलाड़ी आउट हो जाता है।

वहाँ अन्य प्रकार के अनेक खेल होते हैं, जिनमें लँगड़ी टाँग लड़कियों द्वारा मुख्य रूप से खेला जाता है। इसमें ज़मीन पर चॉक या लाल पत्थर की मदद से छोटे-छोटे डिब्बे बनाए जाते हैं, फिर चपटे पत्थर को इन डिब्बों में पैर की मदद से डालना होता है, वो भी बिना लाइन को छुए।

शब्दार्थ

मनभावन – मन को भाने वाले, चूक – गलती

अंत में एक पैर पर खड़े रहकर पत्थर को एक हाथ से बिना लाइन को छुए उठाना होता है। इस खेल को अलग-अलग तरीकों से खेला जाता है।

भास्कर, यहाँ पिट्ठू गरम भी काफ़ी खेला जाता है। इस खेल को खेलने के लिए एक गेंद और कुछ समतल पत्थरों की आवश्यकता होती है। इन पत्थरों को एक के ऊपर एक रखा जाता है, फिर गेंद की मदद से पहली टीम का खिलाड़ी इन्हें निर्धारित दूरी से गिराने की कोशिश करता है। जैसे ही पत्थर गिरते हैं, दूसरी टीम के खिलाड़ी उसे गेंद की मदद से चेज़ करते हैं। गेंद पत्थर गिराने वाले खिलाड़ी की टीम के किसी खिलाड़ी को छुए, इससे पहले उन्हें गिरे हुए पत्थरों को एक के ऊपर एक लगाकर पिट्ठू गरम बोलना पड़ता है। अगर वह ऐसा नहीं कर पाता, तो वह टीम से बाहर हो जाता है। यह क्रम टीम के अंतिम खिलाड़ी तक चलता है। यहाँ खो-खो भी काफ़ी खेला जाता है। इस खेल में दो टीमें होती हैं। एक टीम रनिंग करती है और दूसरी चेज़। चेज़ करने वाली टीम के 9 खिलाड़ी सीमित दूरी पर एक-दूसरे से उलटा मुँह करके बैठते हैं। रेफ़री की सीटी बजते ही रनिंग टीम के खिलाड़ी एक-एक करके मैदान के अंदर आते हैं, जिन्हें चेज़ करने वाली टीम के खिलाड़ियों को एक निर्धारित समय के भीतर आउट करना होता है। बारी-बारी से दोनों टीमों को रनिंग करने का मौका मिलता है। इसमें जो ज़्यादा खिलाड़ियों को आउट करता है, वह विजेता बनता है।

यहाँ कई बच्चे कंचे भी खेलते हैं। इसको खेलने के लिए छोटी-छोटी गोलियों का प्रयोग होता है। ये गोलियाँ मार्बल्स की बनी होती हैं। इस खेल को खेलने के अनेक तरीके हैं, जिनमें से एक गोली को उँगली की मदद से दूसरी गोली पर निशाना लगाने का तरीका सबसे अधिक पसंद किया जाता है। गोली पर निशाना लगाने वाले को हर सही निशाने पर दूसरा खिलाड़ी एक गोली देता है। अंत में जो ज़्यादा गोलियाँ जीतता है, वह इस खेल को जीत जाता है।

घर में रहकर चोर-सिपाही नाम का खेल यहाँ खूब खेला जाता है, यह यहाँ काफ़ी लोकप्रिय है। चोर-सिपाही में चार खिलाड़ी होते हैं। इसे खेलने के लिए चार पर्चियाँ बनाई जाती हैं, जिनमें राजा, मंत्री, सिपाही तथा चोर लिखा जाता है। सबके लिए अंक

शब्दार्थ

समतल – एक समान, निर्धारित – तय किया गया

निर्धारित किए जाते हैं। चारों खिलाड़ी एक-एक पर्ची उठाते हैं। पर्ची में लिखे अंक उनके होते हैं। अंत में जिसके अधिक अंक होते हैं, वो विजेता होता है।

मुझे पता है कि इन सब खेलों के बारे में सुनकर तुम्हारा इन्हें खेलने का मन करने लगा होगा। मिलने पर अवश्य खेलेंगे। शेष बातें मिलने पर बताऊँगा।

अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना और अंकिता को बहुत-बहुत प्यार।

तुम्हारा मित्र

भानू

कीजिए और सीखिए

उच्चारण तथा श्रुतलेख

खयाल, सन्नाटा, अटारियाँ, गलीचा, पोशाक, संदूक, मुहरें

बोलिए

- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–** (Knowledge)

(क) पत्र में मुख्य रूप से किसके बारे में बताया गया है?

(ख) गाँव का मौसम कैसा है? क्या गाँव और शहर के मौसम में अंतर होता है? कैसे?

(ग) कौन-से खेल को सावधानी से खेलना चाहिए?

(घ) चोर-सिपाही के खेल में कितने खिलाड़ी होते हैं और किस खेल में इस खेल के समान खिलाड़ी होते हैं?

लिखिए

1. सही उत्तर चुनकर सही (✓) का निशान लगाइए– (Application)

(क) पत्र में किसके बारे में बताया गया है?

शहर के बारे में ☐ गाँव और खेल के बारे में ☐

गाँव की हरियाली के बारे में ☐

(ख) लँगड़ी-टाँग मुख्य रूप से किसका खेल है?

लड़कियों का ☐ लड़कों का ☐

दोनों का ☐

(ग) पिट्ठू गरम खेलने के लिए किन चीज़ों की ज़रूरत होती है?

गिल्ली और डंडे की ☐ सीटी और कंचे की ☐

समतल पत्थर और गेंद की ☐

2. खेल व नियमों से संबंधित गलत वाक्यों को सही करके लिखिए–

(क) पिट्ठू गरम के खेल में छोटी-छोटी गोलियों की आवश्यकता होती है।

.....

(ख) कंचे के खेल में पत्थरों को गेंद से गिराने की कोशिश की जाती है।

.....

(ग) घर में रहकर पिट्ठू गरम खेल खूब खेला जाता है।

.....

3. लघु उत्तरीय प्रश्न (Understanding)

(क) गाँव में कौन-कौन से खेल खेले जाते हैं?

.....

(ख) गाँव के लोगों की कोई एक विशेषता लिखिए।

.....

(ग) भानू का गाँव किस तरह के क्षेत्र में है? इस क्षेत्र की कोई एक खास बात लिखिए।

.....

(ग) 'रनिंग', 'रेफ़री' और 'चेज़' किस खेल से संबंधित शब्द हैं?

.....